786
92

रज़ा वालो ! नाम निहाद तंज़ीम दावते इस्लामी को पहचानो

आज नाम निहाद दावत इस्लामी के ताल्लुक़ से अवामे अहलेसुन्नत में बड़ी बेचैनी महसूस की जा रही है। एक तबक़ा वह है जो इस तहरीक को सही बतात है और दूसरा उल्माये हक़ का वह गिरोह है जो इस तहरीक का रद्द फ़रमाते हैं।

हम **नाम निहाद दावते इस्लामी** की कुछ खराबियां बयान करके आप से फ़ैसला चाहते हैं अल्लाह के वास्ते इंसाफ़ कीजियेगा।

★ नाम निहाद दावते इस्लामी के अमीर जनाब इलयास कुतियानवी ने एक किताब लिखी है जिसका नाम है **''रसाइले अत्तारिया''**, इसी रसाइले अत्तारिया के सफ़ा नं० 9 पर लिखते हैं, ***''चालीस मुताफ़र्रिक़ मदनी* फूल'' नं. (1) पख़ाना, पेशाब, मनी, वदी, मज़ी''***

अब हम पूछते हैं कि क्या कोई आशिक़े मुस्तफ़ा यह सुनना भी गवारा करेगा कि पख़ना मदनी फूल है?, पेशाब मदनी फूल है?, मनी मदनी फूल है? वदी मदनी फूल है? मज़ी मदनी फूल है? .... अल्लाह की पनाह ऐसे नापाक जुम्लों से अल्लाह महफूज फरमाये।

अब इंसाफ़ आप के हाथ है, अल्लाह के वास्ते ख़ुद फ़ैसला कीजिये।

★ लीजिये दावते इलियासी वालों की एक और किताब जिसका नाम है:—

''सरकार का पैग़ाम अत्तार के नाम'',

इसी किताब के सफ़ा नम्बर 07 पर लिखा कि **सरकार की आवाज़ मदनी चैनल यानि टेलीवीज़न पर आई।''** अल्लाह की पनाह!

इसी किताब के सफ़ा नम्बर 21 पर लिखा कि **''एक शख़्स ने सरकार को ख़्वाब में देखा, कुछ फ़रिश्ते आक़ा की बारगाह में हाज़िर होकर अर्ज़ करने लगे, या रसूलल्लाह अल्लाह ने इलियास क़ादरी को सलाम भेजा है, तो सरकार ने इरशाद फरमाया सलाम उनको पहुंच जायेगा।**

अब बताइये, क्या ये साफ़ न लिख दिया कि अल्लाह इलियास को सलाम भेज रहा है? और अल्लाह का सलाम इलियास तक सरकार लेके जायेंगे? अल्लाह की पनाह! हर शैतान के शर से।

इसी किताब के सफ़ा नम्बर 36 पर लिखा कि एक **शख़्स ने ख़्वाब में देखा कि इलियास क़ादरी काबतुल्लाह शरीफ़ में बैठे हैं और सरकारे दोआलम एक यमनी शख़्स को हाथ पकड़कर इलियास से मिलवाने ले गये, इलियास काबतुल्लाह शरीफ़ में बैठे हुये थे, उनकी तरफ़ सरकार ने इशारा फ़रमाते हुये इरशाद फ़रमाया, "ये दावते इस्लामी के अमीर इलियास क़ादरी हैं"**

क्या इसमें साफ़ ये न लिख दिया कि सरकारे दोआलम लोगों को पकड़ पकड़ कर इलियास से मिलवाने ले जा रहे हैं और सरकारे दोआलम खड़े हुये हैं मगर इलियास कुतियानवी बैठे हैं, क्या यही अदब है? क्या यही तरीक़ा अहले सुन्नत का है?

इसी किताब के सफ़ा नम्बर 31 पर लिखा कि **एक शख़्स ने सरकारे मदीना और ग़ौसे पाक और इलियास को एक साथ ख़्वाब में देखा तो सरकार ने अमीरे अहले सुन्नत (इलियास कुतियानवी) की तरफ़ इशारा करते हुये फ़रमाया:**—इस ज़माने के तमाम औलिया में इलियास क़ादरी से मुझे सबसे ज़्यादा मुहब्बत है। हमेशा इनकी इताअत करते रहना और इनके दामन को कभी मत छोड़ना।

अल्लाह के लिये इंसाफ़ कीजिये! यह सब क्या है? क्या बनाना चाहते दावते इस्लामी वाले इलियास कुतियानवी को?

यह लीजिये एक और किताब " **मुन्ने की लाश**"

यह किताब भी इन्ही इलियासियों की है, इसके सफ़ा नं0 02 व 03 पर कई जगह हुज़ूर सरकारे ग़ौसे आज़म सरकार बड़े पीर साहब को ***"मदनी मुन्ना"*** लिखा और ग़ौसे पाक के ताल्लुक़ से इस तरह लिखा कि **"मदनी मुन्ना वहां से भाग खड़ा हुआ"**

बोलिये जनाब! ये तर्ज़े तहरीर अदब है या बे—अदबी! इन इलियासियों की एक और किताब **"बरेली से मदीना"** है" जिसमें इन्होंने हुजूर सरकार आला हज़रत को भी **मदनी मुन्ना** लिखा है। क्या यह तर्ज़े तहरीर बुज़ुर्गों का अदब है या बे अदबी?

ये लीजिये एक और किताब इन दावतियों की, **"वसाइले बख़शिश"** इस किताब में सफ़ा नं0 593 पर सरकार की बारगाह में सलाम लिखा है, जिसमें से मैं सिर्फ़ तीन शेर लिखे देता हूँ:—

कहना सेबों को और आडुओं को और केलों को ज़र्द आलुओं को
और तरबूज़ सर पर उठाकर तू सलाम मेरा रो रो के कहना
चावलों रोटियों बोटियों को मुर्ग अण्डों को और मछलियों को
सब्ज़ियों को वहां की पका कर तू सलाम मेरा रो रो के कहना
थालियों को प्यालियों को कहना मिर्च को और मसालों को कहना
चाय की केतली को उठाकर तू मेरा सलाम रो रो के कहना

जरा दिल पे हाथ रखकर इंसाफ़ से बोलिये, ये सलाम है? या फिर सलाम की तौहीन?

ये देखिये! दावतियों की मशहूर किताब "फ़ैज़ाने सुन्नत" इसी किताब के सफ़ा नं0 1283 पर इलियास कुतियानवी तहरीर फ़रमाते हैं:-

ईदुल फित्र का बयान

हम इद क्यों न मनायें? के जवाब में लिखते हैं, "देखिये न, जब कोई मुल्क किसी ज़ालिम हुकूमत के चंगुल से आज़ादी पाता है तो हर साल उसी माह की उसी तारीख को उसकी यादगार के तौर पर जश्न मनाता है।

इस इबारत में इलियास कुतेयानवी ने अल्लाह की हुकूमत को ज़ालिम हुकूमत और रमज़ानुल मुबारक को ज़ालिम हुकूमत का चंगुल और ईदुल फित्र को ज़ालिम हुकूमत के चंगुल से आज़ादी का ज़रिया बता दिया। अल्लाह के लिये इसाफ़ कीजिये।

यह सब क्या है? क्या अब भी इनका रद्द न किया जाये तो फिर कब।

यही वह इबारत है जिस पर मुफ़्ती अय्यूब नईमी साहब और मुफ़्ती शमशाद साहब बदायूनी ने दावते इस्लामी पर कुफ्र का हुक्म सादिर फ़रमाया है। जिसकी तफ़सीले ताम के लिये किताब "**रक़्से इब्लीस**" का मुतालआ कीजिये। जो बरेली शरीफ़ से शाया हुई।

ये लीजिये दावते इलियासी वालों की एक और किताब जिसका नाम है "**मुख़ालफ़त मुहब्बत में कैसे बदल गई**" के सफ़ा नम्बर 16 से 19 पर लिखते हैं:-**एक शख़्स ने ख़्वाब में देखा कि हुज़ूर सरकार ग़ौसे आज़म फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स दे रहे हैं।**

बोलिये, जिस किताब पर उल्माये अहलेसुन्नत कुफ्र का फ़तवा लगायें क्या उस किताब का दर्स हुज़ूर ग़ौसे आज़म देंगे।

और इसी किताब में लिखा कि एक शख़्स ने ख़्वाब में देखा कि "**ख़ानक़ाहे क़ादरिया शरीफ़ में तीन कुर्सियें हैं, एक कुर्सीपर हुज़ूर ग़ौसे पाक तशरीफ़ फ़रमा हैं, और बराबर वाली कुर्सी पर इलियास बैठे हैं और हुज़ूर ग़ौसे पाक मुरीद फ़रमाते वक़्त वही अल्फ़ाज़ पढ़ रहे हैं जो अमीरे अहले सुन्नत(इलियास कुतियानवी) मुरीद करते वक़्त पढ़ाते हैं।**

यह देखिये इलियास अत्तार सरकार ग़ौसे पाक के बराबर में बैठने का दावा करके अवामे अहले सुन्नत को यह ज़हन देना चाहते हैं कि बड़ों-बड़ों का मर्तबा तो सरकार ग़ौसे पाक के क़दमों तक है और मेरा यह मक़ाम है कि मैं सरकारे ग़ौसे पाक के बराबर में कुर्सी पर बैठा हूं। (**अल्लाह की पनाह**) क्या यही अदब है? क्या यही बुज़ुर्गो का तरीक़ा रहा? अल्लाह के लिये इंसाफ़ कीजिये!